International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

1857 के विद्रोह का स्वतंत्रता आंदोलन पर प्रभाव (एक वि"लेशणात्मक अध्ययन)

डॉ0 अ"ाोक कुमार,
पिता स्व0 सुरे"ा सिंह,
इतिहास विभाग,
ललित नारायण मिथिला वि"वविद्यालय,
दरभंगा, (बिहर)।

सन् 1857 का संघर्ष ब्रिटि"ा सत्ता एवं उसके द्वारा उत्पन्न अनेक बुराईयों के विरूद्ध एक क्रांति थी। अंग्रेज द्वारा शासित समाज में अन्याय, शोषण, उत्पीड़न तथा सांस्कृतिक हस्तक्षेप ने भारतीयों में चेतना जगा दी थी। मुक्ति हेतु उद्यम ही उसका उपाय है। इन तथ्यों को कुछ इस रूप में देखा जा सकता है कि युद्ध के दौरान अंग्रेज पहले यह मान लेते थे कि यह संघर्ष इसाईयों के विरूद्ध जेहाद है, फिर गिरजाघर को सही–सलासमत देखकर आ"चर्य करते थे कि वे इसे क्यों छोड़ गए। स्यालकोट के दृ"य के संबंध में केये ने लिखा है कि ''हर चीज नष्ट कर दी गई या विद्रोह उसे उठा ले गये, सिवा एक विचित्र अपवाद के, जिसका कारण समझ में नहीं आता, गिरजाघर जिसे इसाईयों ने अपने ई"वर की उपासना के लिए बनाया था।'' ''विद्रोह में न तो इसाईयों को वि"ोष रूप से ढूँढ़ा गया, न इसाई प्रजाति से ही उसका विद्रोह हुआ था। इस सच्चाई को भी हम मान लें कि धार्मिक सहिष्णुता हमारी सांस्कृतिक जीवन की वि"ोषता रही है। तब भी इस बात की पुष्टि तो मिलती ही है कि क्रांतिकारी पक्ष उन सभी लोगों को दबाता था जो अंग्रेजों से मिले हुए थे। अंग्रेज अन्याय के प्रतीक थे। इस तरह यह संघर्ष धर्म विरोधी नहीं था। फिर भी अंग्रेज दंगे कराने से बाज नहीं आये।

अंग्रेज भारतीयों की जिस धार्मिक भावनाओं को उभारकर अपने उद्दे"य की पूर्ति करना चाहते थे, भारत में उसकी जड़ें राजीनति को धर्म से जोड़कर उसके अनुपालन का अनु"ाासन प्राचीन काल से ही भारतीय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परंपरा में विद्यमान थी। यह धर्म मनुष्य के कर्म से जुड़ा हुआ था। राजनीति का स्वरूप राजा की सोच एवं आद"ार्ों के व्यक्तिगत जीवन पर निर्भर था। आम जनता का राजनीति से कोई लेना देना नही था।'' 18वीं सदी के अराजकता काल में भी जनता राजनीति के उत्थान पतन से प्रभावित होते हुए अनु"ाासित थी जिसमें जनसमूह का राज्य–कार्यों में हस्तक्षेप नहीं बल्कि उनके आदे"ाों एवं नियमों का पालन था। द्वितीय वि"वयुद्ध के दौरान गाँधी जी द्वारा अंग्रेजों का समर्थन देने की क्रिया को उसी परम्परा के अंतर्गत देखा जा सकता है। इस संबंध में सर सैय्यद अहमद के शब्दों में भी ''भारतीयों को वि"वास है कि स्वामी की सेवा करना कोई अपराध नहीं है और उन्हें क्षणाधी"ा की आज्ञा का पालन करना चाहिए।'' 1857 की क्रांति के दौरान के प्रति सिक्ख सैनिकों की भक्ति एवं सहायता को उसी संदर्भ में देखा जा सकता है।[1]

18वीं सदी के अराजकता काल में भी जब सामन्तों एवं दे"ाी राजाओं के व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक जीवन में अद्यःपतन आया, जनसाधरण में ऊँचे दर्जे की व्यक्तिगत ईमानदारी और नैतिकता कायम थी।[1] प्रसिद्ध अंग्रेज अफसर जॉन माल्कन ने भारतीय समाज में चोरी, न"ाो और हिंसा जैसे अपराधों के अभाव की बहुत प्र"ांसा की। एक अन्य यूरोपियन लेखक क्रेन्फोर्ड ने लिखा है, ''उनके नैतिकता के नियम अति उदार है और मुझे वि"वास है कि अतिथि सत्कार और दान देने के गुण जितने हिन्दुओं में कूट–कूट कर भरे हुए हैं, इतने संसार में और किसी जाति में नहीं है। ''राजनीति में यह मानवीय मूल्य कायम थे। बर्नियर ने उल्लेख किया है कि ''मध्यकाल के शासन–प्र"ाासन में मुस्लिम शासक बल प्रयोग करते थे, हिन्दू राजा जनमा क`मत एवं परम्परा से शासन करते थे।''

इसी पृष्ठभूमि से निकले वि"ाल जन समूह ने 1857 के सैनिक विद्रोह में शामिल होकर उसे लगभग दे"ाव्यापी आंदोलन के रूप में परिवर्तित किया। विद्रोही सैनिक भी ग्रामीण परिवे"ा के किसान एवं किसानों के बन्धु थे। अतः विद्रोही सैनिकों की भागीदारी को उसी समाज के अभिन्न सदस्य के रूप में देखना होगा, जिसका उद्दे"य अंग्रेज को दे"ा से बाहर निकालना था और किसी बहाने की जरूरत नहीं थी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद बहुत से राज्य स्वतंत्र राज्यों में बँट गये थे। इन स्वतंत्र राज्यों का भौगोलिक अकार या स्वरूप चाहे जो भी रहा, पर वे थे उसी वि"ाल भारत के टुकड़े, जहाँ सदियों से एक ही जीवनशैली थी। उनके बीच एक सांस्कृतिक विभिन्नता में एकता थी। असंगतियों एवं सांस्कृतिक गिरावट के तत्कालीन परिस्थितियों में भी इसी सच ने 1857 की क्रांति के लिए एक धारातल तैयार किया था।

श्री पट्टाभिसीतारमैया 1857 पर लिखते हैं कि, ''1757 में पलासी के युद्ध के बाद एक सदी तक जो कुछ अन्याय हुआ था यह केवल उसी का नतिजा नहीं था, बल्कि मनुष्यों के हृदय में जो एक स्वाभाविक इच्छा होती है कि हम अपने ही लोगों द्वारा शासित हों और किसी अन्य के द्वारा नहीं, यह उसी का परिणाम था।''[4] वीर सावरकर ने ''स्वराज्य एवं स्वधर्म प्राप्ति की पावन इच्छा को क्रांति का मूल माना है।''[5] इसी संदर्भ में सु"ाोभन सरकार ने लिखा हे कि ''एक विदे"ाी शक्ति की पराधीनता हमारे प्राचीन समाजिक संगठन को निर्ममता से भंग कर रही थी और वही कदाचित भारतीयता की भावना को संबल दे रही थी।''[6]

वस्तुतः माता एवं मातृभूमि से लगाव होना मनुष्य का एक नैसर्गिक गुण है। अतः सन् 1857 के समय में सोच के स्तर पर जो भारतीयता दिखायी देता है वह भारत से कभी विलुप्त नहीं हुआ। यह भारत की संस्कृति में रचा बसा था। राधा कुमुद मुखर्जी ने उपनिवे"ा पूर्व दौर में ''तीर्थ स्थान रूपी संस्था को लोगों में भौगोलिक चेतना विकसित करनेवाला सार्वधिक शक्ति"ाली घटक के रूप में देखा है, जो उन्हें यह सोचने और महसूस करने की क्षमता देती है कि भारत महज भौगोलिक खण्डों का ढ़ेर नहीं है बल्कि यह एकल लेकिन वि"ाल अवयव है जो एक छोर से दूसरे छोर तक जीवन के स्पंदन से परिपूर्ण है।[7] अंग्रेजों के आगमन के बाद हम उनकी राष्ट्रीयता के अर्थ में ही भारत दे"ा की झलक का अवलोकन करना चाहते हैं, पर भारतीय सांस्कृति अति प्राचीन होने के कारण कई अन्य विषाक्त अवयव इमें घुलमिल गये थे। यही कारण है कि सन् 1857 की महाघटना में शामिल भारतीय समूहों का आधार जब हम अंग्रेजी सभ्यता के मापदंड में करने की कोि"ा" करते हैं। तब इसकी प्रकृति जटिल जान पड़ती है। भारतीय संस्कृति पौराणिक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है। अत्यंत प्राचीनकाल से ''यहाँ के लोग अपने धार्मिक कृत्यों में गंगा के साथ गोदावरी का भी स्मरण करते रहे हैं। यहाँ का एक धर्म तीर्थ हिमालय में है तो दूसरा घर दक्षिण के समुद्रतट पर। यहाँ समुद्रगुप्त, चेनगुप्त, स्कंदगुप्त आदि प्राचीन राजाओं ने चक्रवर्ती सम्राटों के रूप में दे"ा में उससे अधिक एकता स्थापित की जितनी एलिजाबेथ के समय में ग्रेटब्रिटेन में हुई थी।''[8]

सालों तक सामाजिक, न्याय, समानता तथा जनकल्याण के सिद्धान्तों पर आधारित शासनात्मक व्यवस्था में रहने वाली भारतीय जनता के जीवन में मुगलकाल की अराजकता तथा ईस्ट इंडिया कम्पनी के शोषण एवं दमन की नीति ने तबाही मचा दी थी। इस स्थिति ने 'राजा, रंक और फकीर' सबको 1857 की क्रांति के मंच पर ला खड़ा किया।

अंग्रेजी राज्य में जनता के हर वर्ग का शोषण हुआ था जिसके कारण अंग्रेजों के प्रति भारत के वि"ाल जनसमूहों में व्यापक असंतोष एवं घृणा थी। सिपाहियों के अंदर उनके कामकाज की स्थितियाँ बेहद खराब होने के कारण वे असंतुष्ट थे। एक तरफ उनकी स्थिति ब्रिटेन के साम्राज्यवाद के बलि–वेदी पर चढ़ने वाले की थी। जिसकी वजह से उनका मनोबल टूटा था, दूसरी तरफ सेना में उनकी हैसियत पूरी तरह गुलामी जैसी थी, जिसने उनके भीतर आक्रो"ा को बढ़ाने में आग में घी का काम किया। किसानें के पुरखों की जमीन छीन ली गयी जिसके वे मालिक थे। किसानों पर कर का असहाय बोझ लाद दी गयी थी। नई न्याय प्रणाली एक आतंक की चीज बन गई। दर्जनों स्वतंत्र राजाओं के राज्य को बल पूर्वक ब्रिटि"ा साम्राज्य में मिला लिया गया। उद्योगधंधों के नष्ट हो जाने से कारीगर श्रेणी को बोझ जमीन पर पड़ा, उससे दोनों वर्गों की दुर्द"ाा हुई। इसका प्रत्यक्ष असर सैनिकों के मन पर पड़ा। क्योंकि वे किसान श्रेणी से ही आते थे।[9] अंग्रेजी साम्राज्य की बढ़ती साम्राज्यवादी प्रवृतियों से सांस्कृति क्षेत्र भी वंचित नहीं रहा इससे अंग्रेज प्र"ांसक बुद्धिजीवी भी विचलित हो गये थे। यद्यपि क्रांति में उनकी भूमिका नगण्य थी। परन्तु उनके द्वारा संचालित धार्मिक आंदोलन भारतीय चेतना से प्रेरित थे। यह चेतना अपनी दोषों को दूर कर क्षमता

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

प्राप्त करने की थी। राजाराम मोहन राय ने धार्मिक सुधार के माध्यम से जिस प्रकार अद्वैतवाद को आगे बढ़ाने के लिए 1828 में वेदांत कॉलेज (बाद में बंद हो गया था) की स्थापना की। हिन्दू धर्म ग्रन्थों का अंग्रेजी में अनुवाद कर पा"चात्य लोगों को हिन्दू धर्म की सत्यता से परिचित कराया वह भारतीय एवं उसके समृद्ध सांस्कृतिक मूल्यों के प्रद"ान एवं लगाव से ओत–प्रोत थे।

सन् 1857 की क्रांति सेना, आम जनमा एवं सामंतों के संयुक्त मोर्चे की कार्यवाही थी। संगठन के सूत्रों के बीच एक नि"चत उद्दे"य था। अंग्रेजी शासन का अंत और भारतीय राज्यसत्ता की स्थापना। यद्यपि कुछ अवांछित तत्व भी सम्मिलित हो गये थे। युद्ध में शामिल सेना से लेकर राजे–रजवाड़े एक आद"ा से प्रेरित थे। इस क्रांति की शुरूआत करने वाले विद्रोही दे"ाी सिपाहियों ने भी नेतृत्व संभालने का आग्रह उन्हीं नेताओं से की जिनकी अंग्रेज विरोधी चेतना से वे पूर्व परिचित थे। सन् 1857 की राज्य क्रांति कदाचित व्यापक रूप ग्रहण नहीं कर पाता अगर इन नेताओं का नेतृत्व शक्ति नहीं मिलता यद्यपि इस क्रांति में अधिका"ा सामंतों एवं दे"ाी राज्यों की भूमिका अंग्रेजों के समर्थन में रही और उन्हीं के कारण क्रांति को दबाने में सफल रहे थे। वहीं रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहेब, हजरत महल तथा कुँवर सिंह जैसे नेताओं की एक पंक्ति के कारण ही इस क्रांति को जुझारू और लम्बे समय तक चलाये रखना संभव हो सका था। इस क्रांति को विस्तृत भौतिक आधार भी इन्हीं नेताओं ने उपलब्ध कराये थे। युद्ध की रणनीति, कौ"ाल, पराक्रम, अदम्य साहस तथा जनता में लोकप्रियता के हिसाब से सभी में एक समानता थी। कुछ खो जाने एवं उसे प्राप्त करने की स्थिति में जीवन तक की कुर्बानी का ध्येय एवं त्याग था। आम जनता की नजर में यह नेता का नैतिक धर्म था जो जनता की नेता के प्रति श्रद्धा भक्ति सांस्कृतिक परंपराओं के हिस्से थे। मार्क्सवादी इतिहासकारों द्वारा क्रांति में शामिल नेताओं की भागीदारी को स्वार्थपरक एवं भौतिक हितों से प्रेरित बताया गया है। पर यह आधार तर्कपूर्ण नहीं लगता क्योंकि भौतिक उपलब्धि के लिए प्रयत्न"ाील व्यक्ति में जीवन उत्सर्ग की चाहत नहीं होती। जिस तरह का ऐतिहासिक प्रद"ान झाँसी की रानी, कुँवर सिंह,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

तात्या द्वारा वह भौतिकता से परे था। इन नेताओं का व्यवहारिक आचरण भी सांस्कृतिक आद"ाों के अनुरूप थे। बल्कि जिन सामंतों ने अंग्रेजों का साथ दिया उनका आधार भौतिक था। भारतीय संस्कृतिक की यह सबसे बड़ी वि"ोषता है कि आचार की निर्मलता पर इसमें ध्यान दिया गया है। किन्तु भारत में कोरा ज्ञान सर्वदा गर्दिस कहा गया है। भगवान बुद्ध शील, साधना, तपस्या के मूर्तिमान प्रतीक थे। एषणा, त्याग और वासना–निरोध द्वारा सम्यक जीवन का विराट् द"ान भारत और जगत् के सामने उन्होंने रखा। प्राचीन भारतीय संस्कृति का रहस्य ही आचार है। भारत की पुरानी जमीन से जुड़े इन नेताओं के प्रद"ान में इन तथ्यों को देखा जा सकता है। इनके नेतृत्व शक्ति के कारण ही क्रांति की प्रकृति में 'राष्ट्रीयता के कुछ हिस्से' ''राष्ट्रीय धर्मयुद्ध तथा स्वधर्म के लिए संघर्ष'' ''राष्ट्रीय आन्दोलन'' के तथ्यों को स्वीकार किया गया। ''बगावत में राष्ट्रीय प्रयोजन की बात की गयी।'' लक्ष्मीबाई को ''सर्वोत्तम और सबसे ज्यादा बहादुर'' तात्या टोपे को ''अधिक प्रतिभावान'' हजरत महल को ''सक्षम लोक नेता'' तथा कुंवर सिंह को ''सर्वश्रेष्ठ योग्य सैनिक'' के रूप में माना गया।[10]

1857 की क्रांति में कारगत उपादान सिपाही और शत्रु थे। परन्तु इस क्रांति में अंग्रेजों के विराधी खेमा के सिपाहियों ने अंग्रेज स्त्रियों एवं बच्चों के साथ संवेदन"ाीलता का व्यवहार किया एवं अकारण हिंसा से बचा था।[11] अवध के बच्चों से अपने आन्दोलन को कलंकित न करना।'' शाहाबाद के नेता वीर कुंवर सिंह के नेतृत्व में, ''एक भी यूरोपीय की हत्या नहीं हुई थी।'' युद्ध एवं तबाही के ऐसे आलम में भी नेताओं द्वारा राष्ट्रीय राजनीति का जो नया चित्र उभरा उसमें सांस्कृतिक परम्परागत दृष्टिकोण का परिचायक था।[12]

1857 की क्रांति का सर्वाधिक संबंध यही है कि इसी समय भारत में राष्ट्रीय आंदोलन का नींव पड़ा। इस संबंध में रजनी पामदत्त ने बहुत सही मुल्यांकन किया है, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का उदय सामाजिक परिस्थितियों में से हुआ था। साम्राज्यवाद और उसकी शोषण व्यवस्था से हुआ था और शोषण की परिस्थितियों के अधीन भारतीय समाज के अंतर्गत सामाजिक और आर्थिक ताकतों से हुआ था। अगर इसमें यह

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 4, April - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जोड़ दिया जाय कि इन ताकतों को श्रोत भारतीय संस्कृति और अध्यात्म था तो अति"योक्तिपूर्ण नहीं होगा।

संदर्भ :

1. सर सैय्यद अहमद खान, ऑन द कॉलेज ऑफ इंडियन रिवॉल्ट, पृ0 – 159–185
2. टनिरूद्ध राय, इंडिया स्ट्डीज इन द हिस्ट्री ऑफ एन आइडिया, पृ0 – 159–185
3. पट्टाभिसीतारमैया, हिस्ट्री ऑफ द इंडियन ने"ानल कांग्रेस, दिल्ली 1969, पृ0 – 188
4. वी० डी० सावरकर, इंडियन वार ऑफ इंडिपेन्डेंस, पृ0–188
5. सु"ाोभन सरकार, बंगला नवजागरण, प्रथम हिन्दी संस्करण पृ0 – 108–109
6. राधा कुमूद मुखर्जी, ने"ानलिज्म इन हिन्दू कल्चर, लंदन, 1921 पृ0 – 39
7. राम विलास शर्मा, एन सतावन की राज्य क्रांति, आगरा, 1957
8. इरफान हवीब, 1857 का आगमन, पृ0 – 201–208
9. सौम्येन्द्र नाथ ठाकुर, आधुनिक भारत के निर्माता 1996
10. वी० डी० सावरकर, वही
11. रजनी पामदत्त, इंडिया टूडे, 1970
12. अनु"ाीलन, शोध जर्नल, वाराणसी, वॉल्युम–XLVIII, वर्ष–2013, पृ0–348

*****